२ न्याय की कुर्सी

कहानी सारांश

यह कहानी उज्जैन नगर से जुड़ी है। वहाँ के एक मैदान में कुछ लड़के खेल रहे थे। उनमें से एक लड़के को एक पत्थर की बड़ी चक्की जैसी वस्तु मिली। वह उस पर बैठकर राजा बन गया और बाकी लड़के अपनी-अपनी शिकायतें लेकर उसके पास आने लगे। वह लड़का बुद्धिमानी से उनके झगड़े निपटाता। धीरे-धीरे उसकी समझदारी की चर्चा पूरे नगर में फैल गई।

एक दिन असली राजा को पता चला कि लोग अब लड़के के पास न्याय के लिए जाते हैं। यह सुनकर राजा को गुस्सा आया और वह स्वयं उस स्थान पर पहुँचा। वहाँ जाकर उसने देखा कि वास्तव में वह पत्थर कोई साधारण पत्थर नहीं बल्कि राजा विक्रमादित्य का सिंहासन था, जिस पर सुंदर मूर्तियाँ बनी थीं।

जब राजा उस सिंहासन पर बैठने लगा, तो मूर्तियाँ बोल उठीं और उससे प्रश्न करने लगीं—क्या उसने कभी चोरी नहीं की, झूठ नहीं बोला, किसी को कष्ट नहीं दिया? राजा को अपने दोष याद आए और वह पीछे हट गया। मूर्तियों ने उसे उपवास और प्रायश्चित करने की सलाह दी। बार-बार प्रयास करने पर भी राजा सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं सिद्ध हुआ।

मुख्य संदेश:-

न्याय करने के लिए केवल शक्ति, पद या धन ही नहीं चाहिए, बल्कि सच्चाई, ईमानदारी, दया, विवेक और निष्पक्षता जैसे गुणों का होना बहुत आवश्यक है।

शब्दार्थ

- **प्राचीन** – बहुत पुराना
- **ऐतिहासिक** – इतिहास से जुड़ा हुआ
- **न्याय** – सही और गलत का निर्णय करना।
- **मैदान** – खुली और समतल ज़मीन
- **दरबार** – राजा का सभा-स्थान जहाँ लोग अपनी बातें कहते हैं।
- **दरबारी** – राजा के दरबार में रहने वाला व्यक्ति
- **झगड़ा** – आपस में विवाद या लड़ाई।
- **टीला** – मिट्टी या रेत का ऊँचा छोटा ढेर
- **प्रायश्चित** – अपने किए हुए गलत काम के लिए पछताना और सुधार करना।
- **चिकना** – एकदम सपाट और मुलायम सतह वाला
- **उपवास** – बिना खाए-पीए रहना।
- **विवेक** – सही-गलत समझने की बुद्धि।
- **शिला** – बड़ा पत्थर
- **सिंहासन** – राजा की बैठने की विशेष कुर्सी।
- **चमत्कार** – अद्भुत घटना।
- **आश्चर्य** – हैरानी।
- **प्रतिमा** – मूर्ति।
- **निर्दोष** – जिसका कोई दोष न हो।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

- **फरियाद** – शिकायत या अर्ज़ी
- **आज्ञा** – आदेश।
- **भोले-भाले** – सीधे-सादे।
- **गवाही** – किसी बात की सच्चाई बताना या पुष्टि करना
- **न्याय-बुद्धि** – सही-गलत को पहचानने की समझ
- **दैवी शक्ति** – भगवान जैसी चमत्कारी ताकत
- **दंग रह जाना** – बहुत ज़्यादा हैरान हो जाना
- **लाव-लश्कर** – राजा की सेना और उसके साथ आने वाला समूह
- **स्तंभित** – बहुत चकित या हैरान रह जाना
- **कलुष** – बुराई, पाप।
- **दृढ़ कदम** – आत्मविश्वास से भरे हुए ठोस कदम
- **उड़ गई** – आकाश की ओर चली गई (यहाँ चमत्कार के रूप में)

प्रश्न - अभ्यास

बातचीत के लिए

1. **आपका प्रिय खेल कौन-सा है? आप उसे कैसे खेलते हैं?**

   उत्तर: मेरा प्रिय खेल क्रिकेट है। हम इसे टीम बनाकर खेलते हैं। एक टीम बल्लेबाजी करती है और दूसरी गेंदबाजी और फील्डिंग।

2. **क्या आपने कभी किसी समस्या का समाधान किया है? अपना अनुभव बताइए।**

   उत्तर: हाँ, एक बार मेरी दो सहेलियों में झगड़ा हो गया था। मैंने दोनों की बातें सुनीं और उन्हें समझाया कि मिल-जुलकर रहना चाहिए। वे मान गईं और दोस्त बन गईं।

3. **यदि आप राजा के स्थान पर होते और आपको लड़के के बारे में पता चलता तो आप क्या करते?**

   उत्तर: यदि मैं राजा होता तो उस लड़के की बुद्धिमानी की सराहना करता और उसे दरबार में विशेष स्थान देता।

4. **लड़के के अंदर ऐसे कौन-कौन से गुण होंगे, जिनके कारण वह सिंहासन पर बैठ सका?**

   उत्तर: लड़के में सच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता, दया, समझदारी और न्यायप्रियता के गुण थे।

पाठ से

सही उत्तर पर सूरज का चित्र (✷) बनाएँ—

1. **राजा को लड़के द्वारा न्याय करने के विषय में कैसे पता चला?**

   (क) लड़के द्वारा की गई शरारतों को सुनकर [✷]

   (ख) लोगों द्वारा लड़के के न्याय की प्रशंसा सुनकर [✷]

   (ग) लड़के द्वारा अपने न्याय की बुराई सुनकर [ ]

   (घ) मंत्रियों द्वारा लड़के की बुद्धि की प्रशंसा सुनकर [ ]

2. राजा को सबसे अधिक आश्चर्य किस बात से हुआ?

(क) बच्चे खेल-खेल में न्याय कर रहे थे।

(ख) लोग राजा के दरबार में नहीं आ रहे थे।

(ग) सिंहासन पर बैठने वाला लड़का सही न्याय करता था। ✷

(घ) स्वयं सिंहासन में ही कोई चमत्कारी शक्ति विद्यमान थी।

3. लड़कों को यह खेल इतना अच्छा क्यों लगा कि वे प्रतिदिन इसे खेलने लगे?

(क) क्योंकि वे राजा जैसा बनने का आनंद ले रहे थे। ✷

(ख) क्योंकि यह अन्य खेलों से अधिक मनोरंजक था।

(ग) क्योंकि उन्हें न्याय करने का अनुभव अच्छा लगा।

(घ) क्योंकि इस खेल से वे नगर भर में प्रसिद्ध हो गए थे।

4. राजा ने उपवास और प्रायश्चित क्यों किया?

(क) ताकि वह सिंहासन पर बैठने के योग्य बन सके। ✷

(ख) क्योंकि उसे अपने कर्मों पर पछतावा था। ✷

(ग) क्योंकि मूर्तियों ने उसे ऐसा करने के लिए कहा था। ✷

(घ) क्योंकि जनता ने उसे ऐसा करने को कहा था।

सोचिए और लिखिए

1. सभी लड़के सिंहासन पर बैठ पाए, लेकिन राजा नहीं बैठ पाया। ऐसा क्यों?

उत्तर: क्योंकि लड़के भोले-भाले और निर्दोष थे, जबकि राजा ने जीवन में कई गलतियाँ की थीं।

2. क्या राजा को प्रायश्चित करने के बाद सिंहासन पर बैठने का अधिकार मिलना चाहिए था? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

उत्तर: नहीं, क्योंकि केवल उपवास करने से गलतियाँ मिटती नहीं हैं। राजा को सही व्यवहार अपनाना चाहिए और निर्दोष जीवन जीना चाहिए था।

3. दोनों पक्षकार अपने झगड़े के निपटारे के लिए राजा के दरबार में जाने के बजाय लड़के के पास क्यों गए?

उत्तर: क्योंकि उन्हें लड़के की न्यायप्रियता और निष्पक्षता पर विश्वास था।

4. चौथी मूर्ति सिंहासन के साथ आकाश में क्यों उड़ गई?

उत्तर: क्योंकि राजा सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं था। उसके मन में घमंड और दोष थे।

5. इस कहानी को एक नया शीर्षक दीजिए और बताइए कि आपने यह शीर्षक क्यों चुना।

उत्तर: शीर्षक – "सच्चे न्याय की पहचान"।

क्योंकि कहानी यह बताती है कि न्याय करने के लिए पद या शक्ति नहीं बल्कि सच्चाई और ईमानदारी चाहिए।

www.onepointlearning.com

अनुमान और कल्पना

1. **कहानी में सिंहासन की मूर्तियाँ उड़कर कहीं और चली जाती हैं। वे कहाँ गई होंगी और वहाँ क्या कर रही होंगी?**

   उत्तर: मूर्तियाँ स्वर्ग या देवताओं के पास चली गई होंगी। वहाँ वे यह देख रही होंगी कि कौन सच्चा, ईमानदार और न्यायप्रिय है।

2. **यदि कहानी के अंत में राजा सिंहासन पर बैठने में सफल हो जाता तो क्या होता?**

   उत्तर: यदि राजा सिंहासन पर बैठने में सफल हो जाता, तो लोग सोचते कि वह योग्य है। लेकिन सिंहासन की गरिमा कम हो जाती क्योंकि राजा ने अपने जीवन में झूठ और अन्याय किए थे।

भाषा की बात

1. **नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—**

> *यह तो और भी आश्चर्य की बात है हो न हो पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है मैं इसकी जाँच करूँगा*
>
> ऊपर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। आपको इसका अर्थ समझने में कुछ कठिनाई हो रही है न? अब इसी वाक्य को एक बार फिर पढ़िए—
>
> *"यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा।"*
>
> अब आपको इन वाक्यों का अर्थ और भाव ठीक-ठीक समझ में आ रहा होगा। इसका कारण है कुछ विशेष चिह्न, जैसे– " " , । !
>
> इस प्रकार के चिह्नों को 'विराम चिह्न' कहते हैं। विराम चिह्नों से पता चलता है कि लिखे हुए वाक्यों में कहाँ ठहराव है और उनका क्या भाव है।

   अब नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए—

   (क) चौथी मूर्ति ने कहा ठहरो ओ लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे वे भोले भाले थे उनके मन में कलुष नहीं था अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो

   उत्तर: चौथी मूर्ति ने कहा, "ठहरो! जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे, वे भोले-भाले थे। उनके मन में कलुष नहीं था। अगर तुम्हें विश्वास है कि तुम इसके योग्य हो, तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो।"

   (ख) राजा बड़ी देर तक सोचता रहा फिर उसने मन ही मन कहा अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ मैं राजा हूँ मुझसे ज्यादा धनवान बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ

   उत्तर: राजा बड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने मन ही मन कहा, "अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है, तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ? मैं राजा हूँ। मुझसे ज्यादा धनवान, बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा? मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ।"

2. **"तीसरी मूर्ति भी उड़ गई।" इस वाक्य के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

   (क) इस वाक्य में क्रिया-पद कौन-सा है?

उत्तर: उड़ गई

(ख) कौन-सा पद इस क्रिया-पद के गुण या विशेषता को बता रहा है?

उत्तर: तीसरी (यह विशेषण है, जो मूर्ति की संख्या बता रहा है।)

3. **कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण शब्द पहचानकर उनके नीचे रेखा खींचिए**

(क) एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था।

→ एक

(ख) उज्जैन की प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी के बाहर एक लंबा-चौड़ा मैदान था।

→ प्राचीन, ऐतिहासिक, लंबा-चौड़ा

(ग) इतनी छोटी उम्र में इतनी बुद्धि का होना आश्चर्य की बात है।

→ छोटी, इतनी

(घ) राजा ने देखा कि वह पत्थर नहीं, बहुत ही सुंदर सिंहासन था।

→ सुंदर

(ङ) बात ही बात में वहाँ अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई।

→ अच्छी-खासी

4. **आपमें कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे आप कहानी के सिंहासन पर बैठ सकें? लिखिए—**

उत्तर: १. सच्चाई २. ईमानदारी ३. दयालुता ४. न्यायप्रियता ५. निष्पक्षता ६. विवेक ७. निडरता ८. किसी को चोंट n पहुँचाना

पाठ से आगे

1. **कहानी में गाँव वाले न्याय करवाने या झगड़े सुलझाने बच्चों के पास जाया करते थे। आप अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए किन-किनके पास जाते हैं? आप उन्हीं के पास क्यों जाते हैं?**

   उत्तर: मैं अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए माता-पिता, शिक्षक और बड़े भाई-बहनों के पास जाता हूँ। मैं उन्हीं के पास जाता हूँ क्योंकि वे अनुभवी होते हैं, सही सलाह देते हैं और हमेशा निष्पक्ष निर्णय करते हैं।

2. **क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो? आपने उस स्थिति का सामना कैसे किया?**

   उत्तर: हाँ, एक बार खेलते समय मेरे मित्र ने मुझे आउट कर दिया जबकि मैं सही था। यह मेरे साथ अन्याय था। उस समय मैंने गुस्सा नहीं किया, बल्कि धैर्य से अपनी बात सबके सामने रखी। बाकी बच्चों ने मेरी बात मानी और मुझे फिर से खेलने का अवसर मिला।

www.onepointlearning.com

पता लगाकर कीजिए

"राजा ने आज्ञा दी कि सिंहासन को ले जाकर राजदरबार में रख दिया जाए।"

सिंहासन एक विशेष प्रकार की भव्य कुर्सी हुआ करती थी जिस पर राजा-महाराजा बैठा करते थे। आज भी हम बैठने के लिए अनेक प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करते हैं। इनमें से कुछ वस्तुओं के चित्र दिए गए हैं। इनका वर्णन कीजिए और यह भी लिखिए कि आपकी भाषा में इन्हें क्या कहते हैं।

वस्तु	वर्णन	आपकी भाषा में नाम
• **चटाई**	यह घास, बाँस या प्लास्टिक से बनी होती है। इसे भूमि पर बिछाकर बैठा जाता है।	चटाई
• **दरी**	यह मोटे कपड़े या सूती धागों से बनी होती है। यह उत्सवों या सामाजिक कार्यक्रमों में उपयोग की जाती है।	दरी, कालीन. गालिचा
• **मूढ़ा**	यह बांस, सरकंडा या प्लास्टिक की पट्टियों से बनी गोल/चौकोर वस्तु होती है। इसे बैठने के लिए प्रयोग किया जाता है।	मूढ़ा, मोढा
• **चारपाई**	लकड़ी के खंभों पर रस्सी या पट्टियाँ बुनकर बनाई जाती है। इसका प्रयोग सोने और बैठने के लिए होता है।	खाट, चारपाई, पलंग
• **पीढ़ा**	यह लकड़ी का छोटा सा आसन होता है। पूजा या बैठने के काम आता है।	पीढ़ा, पाटा, चौंकी
• **टाट पट्टी**	यह मोटे धागों या जूट से बनी होती है। स्कूलों में बच्चों के बैठने के लिए बिछाई जाती है।	टाट पट्टी, टाट

बुझो तो जानें

आज हम आपके लिए लाए हैं भारत की अलग-अलग भाषाओं की विभिन्न पहेलियाँ। हो सकता है कि इनमें से कुछ को पढ़कर आपको लगे— अरे! ये पहेली तो मेरे घर पर भी बुझाई जाती है। तो आइए, बुझते हैं ये रोचक पहेलियाँ—

1. **गोंड पहेली**

   न तो खाय न तो पीवहै, संग मां रेंगत है।

   (न खाती है, न पीती है, संग-संग चलती है)

   उत्तर: छाया

2. **निमाड़ी पहेली**

   हरो माथणो, लाल पेट, रस पी लेव भर-भर पेटा।

   (हरे मटके का लाल पेट, रस पी लो भर-भर पेट)

   उत्तर: तरबूज

3. **मालवी पहेली**

   एक जानवर ऐसो, जिसकी दूम पे पैसो।

(एक जानवर ऐसा, जिसकी दुम पर पैसा)

उत्तर: मोर

4. **बुंदेली पहेली**

   एक लकड़ी की ऐसी कहानी, ऊमें लुको है मीठो पानी।

   (एक लकड़ी की ऐसी कहानी, उसमें छिपा है मीठा पानी)

   उत्तर: गन्ना

5. **बघेली पहेली**

   एक दिया सबतर उजियारा।

   (एक दीपक से चारों ओर उजियारा)

   उत्तर: सूर्य

मेरा न्याय

- **अपनी कक्षा से किन्हीं दो ऐसी समस्याओं को चुनिए जिन पर न्याय किया जाना है।**

  उत्तर:

  समस्या 1: दो बच्चों के बीच एक किताब को लेकर झगड़ा।

  समस्या 2: किसी ने दूसरों के लंच बॉक्स से खाना चुरा लिया।

- **कक्षा को दो समूहों में विभाजित कीजिए।**

  उत्तर:

  समूह 1: किताब के झगड़े का नाटक करेगा।

  समूह 2: लंच बॉक्स चोरी की समस्या का नाटक करेगा।

- **दोनों समूह एक समस्या लेकर उस पर विचार करेंगे।**

  उत्तर:

  समूह 1: वे सोचेंगे कि किताब को बारी-बारी से कैसे बाँटें और झगड़ा कैसे सुलझे।

  समूह 2: वे सोचेंगे कि चोर को कैसे पकड़ें और उसे सही सलाह कैसे दें।

- **तत्पश्चात दोनों समूह एक-एक कर नाटक-मंचन के द्वारा समस्या को सुलझाएँगे।**

  उत्तर:

  समूह 1: एक नाटक करेगा जिसमें दो बच्चे किताब के लिए लड़ते हैं, फिर एक समझदार दोस्त आकर बारी-बारी से पढ़ने का फैसला सुनाएगा।

  समूह 2: एक नाटक करेगा जिसमें चोर पकड़ा जाता है, और सभी मिलकर उसे माफी माँगने और भविष्य में ऐसा न करने की सलाह देंगे।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

- **दर्शक समूह प्रतिपुष्टि प्रदान करेंगे।**

क्र.सं.	प्रतिपुष्टि के बिंदु	अंक				
		1	2	3	4	5
(क)	प्रस्तुतीकरण					
(ख)	पात्र संवाद					
(ग)	समस्या का समाधान					
(घ)	पात्रों का आत्मविश्वास					

उत्तर: दर्शक समूह अपनी राय देगा कि नाटक कैसे था और समस्या का समाधान सही था या नहीं।

क्र.सं.	प्रतिपुष्टि के बिंदु	अंक				
		1	2	3	4	5
(क)	प्रस्तुतीकरण				✓	
(ख)	पात्र संवाद					✓
(ग)	समस्या का समाधान					✓
(घ)	पात्रों का आत्मविश्वास				✓	